UP Board 12th Hindi

Model Paper

2020

प्रतिदर्श आदर्श प्रश्न पत्र–2020

कक्षा–12

विषय : हिन्दी

समय : तीन घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 100**

निर्देशः 1– प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

2–सम्पूर्ण प्रश्नपत्र दो भाग–खण्ड'क' खण्ड 'ख' में विभाजित है।

3–सभी प्रश्न अनिवार्य है ।

(खण्ड–क)

प्र0–1 (क) 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैंः 1

(i) सदा सुख लाल

(ii) राजा लक्ष्मण सिंह

(iii) श्रद्धा राम फिल्लौरी

(iv) इंशा अल्ला खां।

(ख) 'शेखर : एक जीवनी' के लेखक हैंः 1

(i) भीष्म साहनी

(ii) जय शंकर प्रसाद

(iii) सच्चिदानन्द, हीरानन्द वात्स्याचन अज्ञेय

(iv) भगवती चरण वर्मा

(ग) 'तितली' के लेखक हैंः 1

(i) अज्ञेय

(ii) श्याम सुन्दर दास

(iii) जय शंकर प्रसाद

(iv) प्रेमचन्द

(घ) 'भारत–दुर्दशा' रचना किसकी है: 1

(i) जयशंकर प्रसाद

(ii) रामकुमार वर्मा

(iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द

(iv) प्रेमचन्द

(ङ) 'निन्दा रस' किसकी रचना है: 1

(i) मोहन राकेश

(ii) श्याम सुन्दर दास

(iii) हरि शंकर परसाई

(iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द

प्र0–2 (क) 'आँसू' के रचनाकार हैं: 1

(i) महादेवी वर्मा

(ii) जयशंकर प्रसाद

(iii) प्रेमचन्द

(iv) अज्ञेय

(ख) द्विवेदी युग की पत्रिका नही है – 1

(i) इन्दु

(ii) प्रभा

(iii) मर्यादा

(iv) हिन्दी प्रदीप

(ग) शेखर : एक जीवनी की विधा है – 1

(i) नाटक

(ii) कहानी

(iii) उपन्यास

(iv) निबन्ध

(घ) 'यामा' किसकी रचना है: 1

(i) जयशंकर प्रसाद

(ii) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(iii) महादेवी वर्मा

(iv) राम कुमार वर्मा

(ङ) 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष है: 1

(i) 1943 ई0

(ii) 1950 ई0

(iii) 1951 ई0

(iv) 1956 ई0

प्र0–3 गद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ?

2×5=10

पुरुषार्थ वह है जो पुरुष को सप्रयास रखे, साथ ही सहयुक्त रखे। यह जो सहयोग है, सच में पुरुष और भाग्य का ही है। पुरुष अपने अहं से विमुक्त होता है; तभी भाग्य से संयुक्त होता है। लोक जब पुरुषार्थ को भाग्य से अलग और विपरीत करते हैं तो कहना चाहिए कि वे पुरुषार्थ को ही उसके अर्थ से विलग और विमुख कर देते हैं। पुरुष का अर्थ क्या पशु का ही अर्थ है? बल–विक्रम तो पशु में ज्यादा होता है। दौड़–धूप निश्चय ही पशु अधिक करता है। लेकिन यदि पुरुषार्थ पशु–चेष्टा के अर्थ से कुछ भिन्नहै और श्रेष्ठ है तो इस अर्थ में कि केवल हाथ–पैर चलाना नहीं है,नक्रिया

का वेग और कौशल है बल्कि वह स्नेह और सहयोग की भावना है।

(i) पुरुषार्थ क्या है?

(ii) पुरुष कब भाग्य से संयुक्त होता है?

(iii) 'विमुक्त' और 'चेष्टा' का शब्दार्थ क्या है?

(iv) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(v) पाठ का शीर्षक एवं लेखक का नाम बताइये।

अथवा

अशोक का वृक्ष जितना भी मनोहर हो, जितना भी रहस्यमय हो, जितना भी अलंकारमय हो, परन्तु है वह उस विशाल सामंत–सभ्यता की परिष्कृत रूचि का ही प्रतीक, जो साधारण प्रजा के परिश्रमों पर पली थी, उसके, रक्त के संसार कणों को खाकर बड़ी हुई थी और लाखों–करोड़ों की उपेक्षा से जो समृद्ध हुई थी। वे सामंत उखड़ गये, समाज ढह गये और मदनोत्सव की धूमधाम भी मिट गई। सन्तान–कामिनियों को गंधर्वों से अधिक शक्तिशाली देवताओं का वरदान मिलने लगा–पीरों ने, भूत–भैरवों ने, काली दुर्गा ने यक्षों की इज्जत घटा दी। दुनिया अपने रास्ते चली गयी, अशोक पीछे छूट गया।

(i) अशोक किसका प्रतीक है?

(ii) विशाल सामंत–सभ्यता कैसे समृद्ध हुई थी?

(iii) यक्षों की इज्जत किसने घटा दी?

(iv) 'परिष्कृत' और 'समृद्ध' शब्द का अर्थ क्या है?

(v) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम बताइये?

प्र0–4 पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (2×5=10)

आज की दुनिया विचित्र, नवीन;
पृकति पर सर्वत्र है विजयी पुरूष आसीन।
हैं बंधे नर के करों में वारि, विद्युत भाप,
हुक्म पर चढ़ता–उतरता है पवन का ताप।
हैं नहीं बाकी कहीं, व्यवधान,
लाँघ सकता है नर सरित, गिरि, सिन्धु एक समान।

(i) कवि के अनुसार आज की दुनिया कैसी है?

(ii) पुरूष के हाथों में क्या बँधे हैं?

(iii) 'चढ़ता–उतरता' में कौन सा समास है?

(iv) रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए?

(v) पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

अथवा

दुःख की पिछली रजनी बीत,
विकसता सुख का नवल प्रभात।
एक परदा यह झीना नील,
छिपाये हैं जिसमें सुख–गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप,
जगत की ज्वालाओं का मूल।
ईश का वह रहस्य वरदान,
कभी मत जाओ इसको भूल।

(i) कवि ने दुःख की तुलना किससे की है?

(ii) कवि के अनुसार झीना परदा में क्या छिपा हुआ है?

(iii) 'सुख–गात' में कौन सा अलंकार है?

(iv) रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए?

(v) पाठ का शीर्षक और कवि का नाम बताइये।

प्र0–5 (क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन परिचय देते हुए उनकी महत्वपूर्ण रचनाओं का उल्लेख कीजिए– 3+2=5

(शब्द सीमा अधिकतम –80 शब्द)

(i) जैनेन्द्र कुमार

(ii) डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी

(iii) डा0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय एवं उनकी महत्वपूर्ण रचनाओं का उल्लेख कीजिए : 3+2= 5

(शब्द सीमा अधिकतम – 80 शब्द)

(i) महादेवी वर्मा

(ii) मैथिली शरण गुप्त

(iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द।

प्र0–6 कथानक के आधार पर 'पंचलाइट' अथवा 'लाटी' कहानी की समीक्षा कीजिए। 5

(शब्द सीमा अधिकतम – 80 शब्द)

अथवा

'ध्रुवयात्रा' अथवा 'कर्मनाशा की हार' कहानी के प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताओं पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालिए।

प्र0–7 स्वपठित 'खण्डकाव्य' के आधार पर किसी एक खण्ड के प्रश्नों का उत्तर दीजिए। 5

(शब्द सीमा अधिकतम–80)

(क) ‘रश्मिरथी’ खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण के चरित्र की विशेषताएँ बताइये।

अथवा

‘रश्मिरथी’ खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालिए।

(ख) ‘मुक्तियज्ञ’ खण्डकाव्य में ऐतिहासिक तथ्यों की प्रधानता है। उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

अथवा

‘मुक्तियज्ञ’ खण्डकाव्य के नायक का चरित्र–चित्रण कीजिए।

(ग) ‘सत्य की जीत’ खण्डकाव्य के आधार पर उसकी नायिका के चरित्र की विशेषताएँ बताइये।

अथवा

‘सत्य की जीत’ खण्डकाव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

(घ) ‘आलोकवृत्त’ खण्डकाव्य में सत्य और अहिंसा का सुन्दर संदेश दिया गया है। स्पष्ट कीजिए।

अथवा

‘आलोकवृत्त’ खण्डकाव्य के नायक की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(ङ) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

अथवा

'त्यागपथी' खण्डकाव्य में प्रस्तुत 'हर्षवर्द्धन' के चरित्र का वर्णन कीजिए।

(च) 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के आधार पर उसके नायक का चरित्र–चित्रण कीजिए।

अथवा

'श्रवण कुमार' खण्ड काव्य की विशेषताओं को उद्घटित कीजिए।

(खण्ड–ख)

प्र0–8 (क) निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससंदर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 2+5= 7

याज्ञवल्क्य उवाच– न वा अरे मैत्रेयि! पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति। आत्मनस्तु वै कामाय पतिः प्रियो भवति। न वा अरे, जायाजाः कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मानस्तु वै कामाय जाया प्रिया भवति। न वा अरे, पुत्रस्य वित्तस्य च कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियां भवति, आत्मानस्तु वै कामाय, पुत्रो वित्त वा प्रियं भवति। न वा अरे, सर्वस्य कामाय सर्वं प्रिय भवति, आत्मानस्तु वै कामाय सर्वप्रियं भवति।

अथवा

अथैकः शकुनिः सर्वेषां मध्यादाशयग्रहणार्थ त्रिकृत्वः अश्रावयत्। ततः एकः काकः उत्थायं 'तिष्ठ तावत्' अस्य एतऽस्मिन राज्याभिषेककाले एवं रूपं मुखं क्रुद्धस्य च कीदृशं भविष्यति? अनेन हि कुद्धेन अवलोकिताः वयं तप्तकटाहे प्रक्षिप्तास्तिला इव तत्र तत्रैव धङक्ष्याम्।

(ख) निम्नलिखित संस्कृत पद्यांशों में से किसी एक का ससंदर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिएः 2+5= 7

अये लाजानुच्चैः पथि वचनमाकर्ण्य गृहिणी।

शिशो कर्णौ यत्नात् सुपिहितवती दीन वचना।।

मयि क्षीणोपाये यद्कृतं दृशा वश्रु वहुलै।

तदन्तः शल्यं मे त्वमसि पुनरूद्धर्तु मुचितः।।

अथवा

प्राप्तः किलाद्य वचनादिह पाण्डवानां

दौत्येन भृत्य इव कृष्णमतिः स कृष्णः।

श्रोतुं सखे! त्वमपि सञ्जय कर्ण कर्णो

नारी मृदूनि वचनानि युधिष्ठिरस्य।।

प्र0–9 निम्नलिखित में से किसी दो प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में दीजिएः

2+2= 4

(i) कस्य कामाय सर्वं प्रिय भवति?

(ii) वसन्त काले वृक्षाः कीदृशाः भवन्ति?

(iii) महर्षे दयानन्दस्य गुरू कः आसीत्?

(iv) विद्यार्थी किं त्यजेत्?

प्र0–10 (क) 'शान्त रस' अथवा 'वीभत्स रस' का स्थायी भाव के साथ परिभाषा या उदाहरण दीजिए। 1+1= 2

(ख) 'यमक' अथवा 'संदेह' अलंकार की परिभाषा या उदाहरण दीजिए। 2

(ग) 'सोरठा' अथवा 'उपेन्द्रवज्रा' छन्द की मात्राओं के साथ उदाहरण या परिभाषा दीजिए। 1+1=2

प्र0–11 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अपनी भाषा–शैली में निबन्ध लिखिए। 2+7 =9

(i) साहित्य और जीवन

(ii) नारी शिक्षा की उपयोगिता

(iii) बढ़ती जनसंख्या का कुप्रभाव

(iv) वृक्षारोपण का महत्व

(v) प्रीति कर काहू सुख न लह्यो।

प्र0–12 (क) (i) 'शायकः' का संधि–विच्छेद है: 1

(A) शा + अकः

(B) शै + अकः

(C) शय + अकः

(D) शौ + अकः।

(ii) 'सच्चित्' का संधि–विच्छेद है: 1

(A) सत् + चित्

(B) सत + चित्

(C) सत्त + चित्

(D) सतः + चित्

(iii) 'विष्णुस्त्राता' का संधि–विच्छेद हैः 1

(A) विष्णु + त्राता

(B) विष्णुः + त्राता

(C) विष्णो + त्राता

(D) विष्णौ + त्रात्।

(ख) (i) 'यथाशक्ति' में समास हैः 1

(A) बहुब्रीहि समास

(B) कर्मधारय समास

(C) अव्ययी भाव

(D) कोई नहीं।

(ii) 'नीलगाय' में समास हैः 1

(A) द्वन्द्व समास

(B) द्विगु समास

(C) कर्मधारय समास

(D) तत्पुरुष समास।

प्र0–13 (क) 'त्रिष्ठतम्' अथवा 'अपठतम्' किस धातु, लकार, पुरूष तथा वचन का रूप है? ½+½+½+½= 2

(ख) (i) 'आत्मनेः' रूप है 'आत्मन्' शब्द काः 1

(A) सप्तमी विभक्ति, द्विवचन

(B) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन

(C) तृतीय विभक्ति, बहुवचन

(D) पंचमी विभक्ति, एकवचन।

(ii) 'येषाम्' रूप है 'यत' शब्द (पुल्लिंग) काः 1

(A) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन

(B) पंचमी विभक्ति, एकवचन

(C) द्वितीय विभक्ति, द्विवचन

(D) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।

(ग) (i) 'पठनीयः' शब्द में प्रत्यय हैः 1

(A) तत्यत्

(B) अनीयर्

(C) नत्वा

(D) तल्

(ii) 'गुरुता' शब्द में प्रत्यय हैः 1

(A) तल्

(B) त्व

(C) तव्यत्

(D) क्त्वा।

(घ) रेखांकित पदों में से किसी एक पद में प्रयुक्त विभक्ति तथा उससे सम्बन्धित नियम का उल्लेख कीजिएः 1+1= 2

(i) <u>विद्यालयं</u> निकषा नदी बहति।

(ii) <u>छात्रेषु</u> अरविन्दः श्रेष्ठः

(iii) भिक्षुकः पादेन खञ्जः अस्ति।

प्र0–14 निम्नलिखित में किन्हीं दो वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिएः– 2+2= 4

(i) तुम्हें क्या करना चाहिए?

(ii) हम जा रहे हैं?

(iii) वे दोनों कल काशी गये थे?

(iv) कृतिका एक मेधावी छात्रा है?

*****